दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अक्षय तेमवाल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एव दिनांक (Test No. & Date): 02, 30/07/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	3	0	9	2	2	1

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 135½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास काफी अच्छा है। पूरा प्रश्नपत्र हल करने का प्रयत्न किया करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत दोहा कबीरदास द्वारा रचा गया है। इसका संकलन 'बिरह कौ अंग' के अंतर्गत किया गया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में कबीर दीपक के माध्यम से उपदेश देते नजर आ रहे हैं। दीपक में तेल भरकर और उसमें बाती लगाकर उसे प्रज्वलित किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- 1) कबीर की सधुक्कड़ी भाषा या पंचमेल खिचड़ी की उपस्थिति है।

2) छन्द योजना : दोहा छन्द

3) प्रथम चरण में 13 मात्राओं का तथा द्वितीय चरण में 11 मात्राओं की योजना की गई है।

4) 13 मात्राओं के पश्चात् यति की व्यवस्था द्रष्टव्य है

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश सूरदास द्वारा रचा गया है, जिसका संकलन शुक्ल ने भ्रमरगीत के अंतर्गत किया है।

प्रसंग :- उद्धव और गोपियों में चल रहे वाद-विवाद की उच्चतम प्रस्तुति है।

व्याख्या :- गोपियों द्वारा विभिन्न उपमाओं का प्रयोग कर उद्धव को सगुण भक्ति के लिए अन्त में परास्त करने की एक कड़ी है। इसमें प्रकृति का स्वरूप, कुत्ते और कौआ की उपमा के साथ गोपियों ने अपने तर्क को प्रस्तुत किया है।

6/

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:- 1) ब्रज भाषा का परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप प्रस्तुत है।

2) लीलापद की संज्ञा स्वयं सूर द्वारा इन पदों को दी गई है।

3) उपालंभ काव्य दृष्टव्य है।

4) उपमा तथा रूपक अलंकार
जैसे: स्वान, काग

5) प्रश्नवाचक शैली का उत्तम प्रयोग।
जैसे: ... कारी कमरी ?

6) वक्रता और वाग्विदग्धता मौजूद है जिसकी प्रशंसा शुक्ल भी करते हैं।

7) कहु करी।।, जौन घरी में उत्तम तुक अवस्था।

8) प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग

9) दृश्य बिंबों का श्रेष्ठ आहरण

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ पदमावत से ली गई है, जिसके ~~रचयिता~~ रचयिता जायसी है।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में नागमति के विरह वेदना का वर्णन है।

व्याख्या :- कवि ने नागमति के विरह अग्नि को विभिन्न उपमाओं के साथ तौल कर प्रस्तुत किया है। वे हनुमान द्वारा लगाई आग, जिसने लंका को राख कर दिया था उससे विरह वेदना की तुलना करते हैं। आगे उन्होंने कौआ की विरह को उसकी भूख के साथ तौला है। और असहाय विरह की अन्य उपमाओं से तुलना की है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- ① अवधी भाषा का प्रयोग इन पंक्तियों में दृष्टव्य है।
② अवधी अपने ठेठपन के साथ ही मधुरता और सुन्दरता को धारण की हुई है (शुक्ल)
③ छन्द योजना : 7 चौपाई के बाद 1 दोहा रखा गया है
④ रानी और जनसामान्य का अन्तर समाप्त हो गया है।
⑤ उपमा की बारिस हुई है।
जैसे हनुमान-लंका
6) चौपाईयों के प्रत्येक चरण में 16 मात्राओं का विधान है
7) प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग दृष्टव्य है
8) नागमति का पतिव्रता प्रेम पवित्र एव सुन्दर है
9) विरह रस और शृंगार रस समाविष्ट है
10) जेठ जरै जग में वृत्तानुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

6/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कवितावली' से उद्धृत है। इसके रचयिता महान कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग :- इन पंक्तियों में तुलसीदास ने समाज में व्याप्त बेरोजगारी और उससे ~~सम्बन्धित~~ सम्बंधित समस्या को उठाया है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि जब किसान के पास खेती करने के लिए भूमि न हो, बनिया के पास व्यापार न और अन्य लोगों के पास भी रोजगार न हो तो पेट की भूख मिटाना मुश्किल हो जाता है इसके लिए लोग अपने बेटा-बेटी को भी बेचने को तैयार हो जाते हैं। उनका मानना है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पढ़ाई या अन्य सभी ~~भाव~~ कार्य जैसे चोर द्वारा चोरी सभी पेट की आग ~~कुछ~~ बुझाने हेतु करते हैं।

विशेष :- सरल, सहज एवं प्रवाहमी ब्रजभाषा का स्वरूप प्रस्तुत है।

2) छन्द योजना : वार्णिक छन्द
3) अल्पविराम का कुशल प्रयोग हुआ है
4) सामाजिक समस्याओं जैसे बेरोजगारी को काव्य में जगह दी गई है।
5) काव्य स्वरूप : क्षीण प्रबन्धधर्मी मुक्तक काव्य है।
6) करम धरम अधरम में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ भ्रमरगीत से उद्धृत है जिनका संकलन शुक्ल ने किया है। इनके रचियता सूरदास है

प्रसंग :- उद्धव और गोपियों के मध्य चल रहे तर्क का अंश है

व्याख्या :- गोपियों के माध्यम से सूर उद्धव पर कटाक्ष करते हैं। वे (गोपियाँ) कहते हैं कि पण्डित अपने निर्गुण भक्ति को लेकर ब्रज आ गया है और योग के मार्ग को सिखाकर हमें सगुण भक्ति मार्ग से हटाना चाहता है। वे कहती हैं कि एक म्यान में दो तलवारे नहीं रह सकती। उनके पास पहले से कृष्ण भक्ति (सगुण) की तलवार है। वे आगे हाथी - गन्ने के प्रसंग को उद्धव से कहती है। तत्पश्चात कहती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूध छोटी से भरने वाला पेट हवा, ऐसी निर्गुण योग भक्ति से नहीं भरने वाला।

विशेष :- 1) ब्रज भाषा का प्रयोग।

2) गीतापद का कुशल प्रयोग

3) उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार लगभग हर पंक्ति में है।

4) शॉडे, खाड़े गाँडे, में उच्च कोटि की तुक व्यवस्था है।

5) वक्रता और वाग्विदग्धता द्रष्टव्य है जिनकी प्रशंसा शुक्ल भी करते है।

6) अलंकारों, मुख्यत: अर्थालंकार का प्रयोग है जिसके कारण द्विवेदी जी को कहना पड़ा की अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर सूर के साथ चलता है।

7) बिम्बों में दृश्य बिम्ब प्रमुख है।

8) उपालम्भ काव्य मौजूद है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'श्रृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उपालंभ अर्थात उलाहना करना। अपने प्रेम प्रेमी से रूठकर अनेकों प्रकार से उनके न मिलने पर व्यंग्य करना ही उपालंभ कहलाता है।

सूरदास का काव्य गोपियों की विरह वेदना से भरा पड़ा है। भ्रमरगीत की यह परम्परा कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' से शुरू हुई जिसकी उच्च कोटी की रचना या शिखर रचना सूरदास का भ्रमरगीत है।

इसी से प्रभावित होकर शुक्ल ने कहा " श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।

शुक्ल ने सूरदास के पदों का संकलन भी किया साथ ही उनकी समीक्षा भी की।

उन्होंने काव्य में प्रयुक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वक्रता और वाग्विदग्धता की भी बहुत प्रशंसा की है।

शुक्ल के अनुसार सूरदास को उपमा और उत्प्रेक्षा के देने की सनक सी चढ़ जाती है। कुछ हद तक यह आक्षेप भी सही है। क्योंकि सूर के पास भाव में श्रृंगार और वात्सल्य है विभाव पक्ष में राधा, गोपियाँ, कृष्णा, और यमुना है। सीमित क्षेत्र होने के कारण उन्हें बार-बार विभिन्न उपमाओं के सहारे नये पद निर्माण करने पड़े।

सूरदास ने गोपियों की विरह को विभिन्न प्राकृतिक उपमाओं के साथ तुलना की है। गोपियाँ अपने सगुण प्रेम की आस्था को उद्धव के सामने विभिन्न तर्कों से रखती है जैसे हारिल की लकड़ी ...

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे उद्धव से कहती हैं की यहाँ उनकी निर्गुण भक्ति नहीं चलने वाली यथा :"निर्गुन कौन देश को बासी"
वे कृष्ण और मथुरा नगरी पर भी ~~कटु~~ कटा संशय करती हैं और कहती हैं मथुरा काजल की कोठरी है जो आता है वह काला।
उपालम्भ काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है कि वे प्रकृति से भी उम्मीद करती हैं कि वे भी विरह वेदना में शामिल हो। पाश्चात्य काव्य में इसे पैथेटिक फैलेसी कहा जाता है।
काव्य की समीक्षा में विरह वेदना जिसे शुक्ल ने बैठे का कार्य कहा उसे नन्ददुलारे वाजपेयी ने नकारते हुए कहा कि प्रेम और प्रेमी के लिए भौगोलिक ही नहीं मानसिक दूरी भी जरूरी है। इस प्रकार उन्होंने भी उपालम्भ काव्य की श्रेष्ठता सिद्ध की

औसत है
11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कबीर दास एक बहुआयामी व्यक्तित्व को धारण करते हैं। उनके अन्दर भक्त, दार्शनिक, कवि, समाज सुधारक, उपदेशक और अन्य कई गुण एक साथ समाहित हुए हैं।

शुक्ल जैसे समीक्षकों ने उन्हें सिद्ध-नाथ परम्परा में ~~शामिल~~ शामिल किया है। उनके काव्य में नाथ परम्परा असर और उनके दार्शनिक प्रभाव को साफ देखा जा सकता है।

निरक्षर होने के कारण उन्होंने दार्शनिक सिद्धांतों को पढ़ा तो नहीं किन्तु बहुश्रुत होने के कारण उन्होंने बहुत से सिद्धान्तों को सुना और सभी का मिश्रण कर अपना दार्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

उनके चरित्र में मुख्यतः

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शंकर के अद्वैतवाद और इस्लाम के एकेश्वरवाद का प्रभाव माना गया है।

उन्होंने भक्ति में राम का नाम तो प्रयोग किया किन्तु उन्होंने राम को ~~सगुण रूप~~ निर्गुण रूप में स्वीकारा

जैसे · दशरथ सुत तिहु लोक बखाना।
राम नाम का मरम न जाना ।।

वे अल्ला और परमात्मा को भी एक मानते थे। इनका ब्रह्म एक था। और वे उनके उपासक थे

~~अह~~ अल्ला
जैसे :

उनके काव्य में सूफियों के प्रभाव को भी स्पष्ट देखा गया है वे दोहे में प्रेम मार्गीकता और प्रेम की प्रस्तुति करते हैं वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन्होंने सूफियों से पाया है
कुलमिलाकर कबीर का दर्शन
विभिन्न दर्शनों का मिश्रण है जिससे
उनके चरित्र के विभिन्न आयामों
की उत्पत्ति हुई।

7.5

बेहतर बनाने
के लिए कुछ
मॉडल उत्तर देखें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

सूरदास के पदों का संकलन शुक्ल ने भ्रमरगीतसार में किया है। पूरे काव्य में निर्गुण व सगुण मत में विवाद है।

काव्य का आरंभ भी इससे होता है जब कृष्ण उद्धव से कहते हैं कि तुम निर्गुण भक्ति के प्रकांड विद्वान हो। तुम ब्रज जाओ और गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान दो।

उद्धव अपने तर्क, बुद्धि और ज्ञान से गोपियों के समक्ष अपने निर्गुण ब्रह्म को रखते हैं किन्तु गोपियाँ भी अपने सगुण कृष्ण भक्ति को बचाने के लिए अनेकों तर्क का प्रयोग करती हैं।

जैसे: "निर्गुण कौन देश को वासी"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और गोपियाँ अपने सगुण भक्ति के सामने उद्धव के निर्गुण भक्ति को व्यापार की संज्ञा देती हैं और कहती हैं– "आयो घोष बड़ो व्यापारी।"

वे उनसे कहती हैं कि उनका यह व्यापार ब्रज में नहीं बिकने वाला। वे कहती हैं कि कृष्ण की सुन्दर, आनन्दमूलक और सभी सुखों को प्रदान करने वाली भक्ति को छोड़ कर कौन मूर्ख होगा जो निर्गुण भक्ति का मार्ग अपना कर योग साधना करेगा।

वे भावना प्रधान भक्ति के पक्षधर हैं। साधना प्रधान भक्ति उन्हें बिलकुल नहीं पसंद।

अनेक उपमाओं जैसे कृष्ण भक्ति को अंगूर तथा निर्गुण भक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

को कड़वी नीम से तुलना कर अपने प्रेम की गहन आस्था उद्धव के सामने रखती है।

अंत में उद्धव जब वापस कृष्ण के पास पहुँचते हैं तो वे कहते हैं - "अति पंगु भयो मन मेरो"

अर्थात् मैं भी उनके सगुण भक्ति से प्रभावित हो गया हूँ।

स्पष्टतः काव्य में गोपियों ने उद्धव को पराजित किया है और सगुण मत की निर्गुण मत पर विजय हुई है।

8½/15

ठीक है।
मॉडल उत्तर भी देखें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश 'स्कन्दगुप्त' से अवतरित हुआ है। जिसकी रचना जयशंकर प्रसाद ने की है।

प्रसंग : यह पंक्तियाँ स्कन्दगुप्त के मुख से नाटक में आई है।

व्याख्या : लेखक ~~कवि स्कन्दगुप्त द्वारा कहे~~ ~~स~~ स्कन्दगुप्त कहता है कि उसे बौद्धों के जैसा जीवन, योगियों जैसा और पागलों जैसे सभी जीवन जीना है वे राजपाट से विमुख होते दिखाई देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- खड़ी बोली हिन्दी में नाटक की रचना हुई है

2) उद्देश्य प्रधान नाटक का अंश।

3) राष्ट्रीय नवजागरण चेतना को प्रसारित करने हेतु निस्वार्थ भाव की अभिव्यक्ति स्कन्दगुप्त के माध्यम से।

4) तत्सम निष्ठ संस्कृत के शब्द जैसे: श्रमजीवी

5) बौद्ध और नाथ सिद्धांतों का प्रभाव

6)

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं–पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'महाभोज' नाटक से उद्धृत है। यह मन्नू भण्डारी द्वारा रची गई है।

प्रसंग:- बिसू की मृत्यु के पश्चात् दा साहब का उनके पिता के घर जाने का वर्णन है।

व्याख्या:- दा साहब की राजनीतिक तरीकों की लोगों द्वारा पारम्परिक निषाद की कथा से तुलना और उनके चरित्र की बड़ाई करना ~~पंक्ति~~ इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- 1) खड़ी बोली हिन्दी नाटक की भाषा है।

2) राजनीति की कूट नीति का उजागर

3) दृश्य बिम्ब की सृजना सृष्टि की गई है।
जैसे - गांव की भीड़ बड़ी..

4) पौराणिक कथाओं के चरित्रों का प्रयोग
जैसे शबरी, निषाद

5) प्रश्नवाचक शैली दृष्टव्य है

6) ग्रामीण जीवन और उनकी सहजता का चित्रण

7) प्रतिष्ठा और मान के आगे मनुष्य जीवन को छोटा बताया गया है
जैसे - बेटो तो जाने ....

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' से उद्धृत है।

प्रसंग:- कालिदास अपने विचारों की अभिव्यक्ति मल्लिका से करता है।

व्याख्या:- गद्यांश में जीवन की प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता का द्वंद्व कालिदास के माध्यम से उजागर हुआ है। कालिदास अपने शहर जाने और वहाँ जाकर कविता न कर पाने की वजह अपने गाँव के वातावरण में खो जाता है और अनुभव करता है कि वह वहाँ से दूर आ गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- 1) खड़ीबोली हिन्दी में नाटक की रचना हुई।
2) शहर और ग्रामीण जीवन में तुलना
3) प्रामाणिकता की खोज
4) स्थिति प्रधान नाटक का अंश।
5) क्रान्ति के स्वरूप का चित्रण
6) ऐतिहासिक कथा का उपयोगितावादी दृष्टि से प्रयोग
7) अस्तित्ववाद और लघुमानववाद का प्रभाव है जिसने चरित्रों के ऊपर स्थिति को रखा गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत है ~~प्रसंग~~।

व्याख्या :- हिन्दु की पौराणिक कथाओं में भगवान के अवतार की कथा का सहारा लिया गया है तथा उनके माध्यम से स्कन्दगुप्त को एक अवतार पुरुष की ~~संज्ञा~~ संज्ञा देकर राष्ट्रमुक्ति के लिए प्रेरित किया जा रहा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- ① उद्देश्य प्रधान नाटक का अंश।

② संस्कृत युक्त खड़ी बोली का प्रयोग

③ ऐतिहासिक ढाँचा का प्रयोग

④ शब्दों और वाक्यों का अनमोल संगठन

⑤ नवजागरण के उद्देश्य से नाटक रचा गया है

6) प्रसाद के प्रत्यभिज्ञ दर्शन तथा मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव

7) लोकव्यवहार का प्रयोग लोकमंगल हेतु

8) धार्मिक कथाओं का सहारा, हिन्दु धर्म के अवतारवाद का प्रभाव

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद हिन्दी के महान रचनाकार है। उन्होंने काव्य, नाटक, कहानियां, उपन्यास जैसी सभी विधाओं में अपनी निपुणता दिखाई है।

इनकी रचनाओं में ~~उनकी~~ उनके दर्शन का प्रभाव साफ नजर आता है।

प्रसाद शैव मत के सिद्धांतों का अनुसरण करते थे। इनका प्रभाव स्कन्दगुप्त में भी नजर आता है। प्रसाद के जीवन में शंकर के अद्वैतवाद का प्रमुख प्रभाव रहा है। इसके अलावा स्कन्दगुप्त में बौद्ध दर्शन का प्रभाव साफ देखा जा सकता है। धातुसेन के माध्यम से इसकी अभिव्यक्ति हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान मे कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद मूलतः प्रत्यभिज्ञ दर्शन के समर्थक थे। वे चाहते थे कि मनुष्यों में इच्छा, क्रिया और ज्ञान में समन्वय हो। यह उनके नाटक में देवसेना के चरित्र में देखा जा सकता है।

उनके दर्शन की यह अभिव्यक्ति कामायनी में भी देखी जा सकती है।

स्कन्दगुप्त ~~के~~ में अन्य दर्शनों में प्रमुख गाँधीवाद है। जिनसे प्रसाद शांति ~~का~~ और अहिंसा का मार्ग ~~प्रस्थ~~ प्रशस्थ करते नजर आते हैं।

सामाजिक चेतना पर्याप्त के विचारों में नजर आती है। उनके नाटक में फ्रॉयड के मनोविश्लेषवाद का ~~प्र~~ प्रभाव भी दृष्टव्य है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सैनिक और भटार्क के संवाद में राष्ट्रीय चेतना का दर्शन भी सामने आया है। जैसे राष्ट्रीय प्रेम, नवजागरण और राष्ट्र हित तो नाटक के अंग-अंग में समाहित है।

नाटक का अंगीरस भी प्रसाद ने आनन्दमूलक शान्त रस को माना है जो आनन्दवाद के सिद्धांतों की ओर संकेत करता है।

कुलमिलाकर प्रसाद अनेक दर्शनों से परिचित थे और उन्होंने सभी दर्शनों को किसी न किसी माध्यम से अपनी रचना का हिस्सा बनाया।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश का पहला नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' अपनी रंगमंचीय सफलता के कारण हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर माना गया है।

इनके नाटक में अस्तित्ववाद दर्शन का प्रभाव साफ नज़र आता है। समीक्षकों ने नाटक को ~~स्त्री~~ स्तिथि (स्थिति) प्रधान नाटक कहा है। और इसका कारण उन्होंने राकेश के जीवन में अस्तित्ववाद और ~~आत्म~~ आत्मलघुमानवाद के प्रभाव को माना है।

नाटक में उन्होंने स्वयं स्वीकारा है कि नाटक की मूल समस्या सत्ता व सृजनात्मकता के द्वंद्व की है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उनके चरित्रों का निर्माण प्रसंगों और स्थितियों के अनुसार हुआ है। वे प्रमाणिकता और अप्रमाणिकता के द्वंद्व से जूझ रही है।

कालिदास अपने कवि-मन की तलाश में अंत में गाँव आ जाता है और अपने जीवन की प्रमाणिकता तलाशता है।

उन्होंने नाटक के माध्यम से नगरी और ग्रामीण जीवन की भिन्नता और उनके प्रकृति के प्रति उपयोगितावादी (शहर) और निश्छल प्रेम (गाँव) को दर्शाया है।

मल्लिका के प्रेम और कालिदास के प्रेम का द्वंद्व को उजागर किया है। मल्लिका के जीवन का अस्तित्व और उसकी सार्थकता को भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामने लाया है।

स्पष्टत: सम्पूर्ण नाटक में मे मानव जीवन के विभिन्न समस्याओं और सामाजिक विघटन में विभिन्न चरित्रों के माध्यम से अ अस्तित्ववादी दर्शन उजागर हुआ है।

7/15

प्रश्नानुरूप गहराई लाएँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रसादपूर्व युग में भारतेन्दु द्वारा रचा गया नाटक 'भारत-दुर्दशा' नाटक हिन्दी साहित्य के इतिहास में कई बार सफलता पूर्वक रंगमंच पर खेला जा चुका है।

युगपुरुष भारतेन्दु एक महान रचनाकार होने के साथ एक अभिनेय करता कर्ता भी थे अतः उन्होंने नाटक में रंगमंच के अनुरूप अनेक निर्देश दिये हैं।

भारत दुर्दशा की रंगमंचीयता की विशेषताएँ

1) गद्य की रचना खड़ी बोली में जो कि लोक प्रचलित है।
2) पद्य को ब्रज भाषा में रचा गया है जो भारतेन्दु युग में काव्य भाषा थी
3) इसके रंगमंच को दो घंटे मे सफलता से किया जा सकता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

4) हास्य व्यंग्य की समाविष्टि दर्शक को बांध कर रखती है।

5) लक्ष्मीसागर ने इनके नाटक को नवजागरण और नवोत्थान का अग्रदूत की संज्ञा दी है।

6) सिर्फ पाँच अंक और उनमें सिर्फ पाँच दृश्य जिससे रंगमंच में ज्यादा समस्या नहीं होती

7) प्रतीकात्मक चरित्रों की वेशभूषा के ~~लिए~~ निर्देश दिए गये हैं

8) दृश्य काफी सरल है।

9) अंत में ~~स~~ संवेदना उत्पन्न करता है जो सफलता के लिए जरूरी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समस्या
- लम्बे और अधिक गीत
- हा, आहा का अत्यधिक प्रयोग।
- ब्रजभाषा के गीत आज दर्शकों अन्य हिन्दी दर्शकों के लिए बाधक।

ठीक है।

6½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'स्कंदगुप्त' नाटक में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' को उद्देश्य प्रधान नाटक कहा गया है। इसका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना जागृत करना है।

प्रसाद ने यह अभिव्यक्ति अनेक पात्रों के माध्यम से की। उन्होंने इतिहासिक कलेवर का प्रयोग उपयोगितावादी दृष्टिकोण से किया।

नाटक की आत्मा, वर्तमान समय के स्वतंत्रता संग्राम हेतु राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना।

स्कन्दगुप्त जो कि नाटक का नायक है। वह सत्ता से प्रेम या सत्ता प्राप्ति के उद्देश्य से लड़ाई नहीं करता। वह सिर्फ देश की मुक्ति के लिए ~~अ~~ लड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके माध्यम से लेखक जनसमुदाय
निस्वार्थ
में निश्वार्थ राष्ट्रीय समर्पण जगाना चाहते थे।

देवसेना, भीमवर्मा और जयमाला द्वारा अपने राज्य का त्याग। या त्याग भावना और राष्ट्रीय प्रेम का सूचक है।

इसके माध्यम से लेखक, क्षेत्रीयवाद के ऊपर राष्ट्रवाद को रखना चाहते हैं तथा संदेश देना चाहते हैं कि राष्ट्र हेतु कुछ भी त्यागना पड़े तो भी हमे पीछे नहीं हटना चाहिए।

पर्णदत्त और चक्रपालित जैसे निस्वार्थ सैनिक, जो अंत तक देश हित में लगे हुए थे। पर्णदत्त भीख मांगकर कर भी अपने देश की सेवा में लगा रहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देशद्रोही चरित्र जैसे अनन्तदेवी, शर्वार्क और पुरगुप्त के प्रति घृणा भावना को उजागर किया है लोगों के मन में उनके लिए वितृष्णा उत्पन्न हुई है।

अन्य चरित्रों में कमला, जो राष्ट्रहित के लिए पुत्रमोह का त्याग करती है।

रामा, अपने पति के विरुद्ध सच बताती है।

इस प्रकार सभी स्त्री चरित्र किसी न किसी प्रकार से नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करते हैं

11/20

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली–9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या 'भारत-दुर्दशा' नाटक नवजागरण चेतना को अपने भीतर समाहित करने में सफल हो पाया है? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नवजागरण चेतना को जगाने के लिए सबसे पहले अपने देश के गौरव को दर्शक या श्रोता को सामने लाया ~~जाता~~ जाता है। 'भारत दुर्दशा' में भी पहले अंक में भारत के गौरव का वर्णन है ताकि जनता अपने इतिहास से प्रेरणा ले सके।

नाटक अपने समय प्रचलित सामाजिक बुराईयों जैसे धार्मिक आडम्बरों, साम्प्रदायिकता, झाड़-फूक पर करारा व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं। अनेक प्रतीकात्मक चरित्रों जैसे अन्धकार, मदिरा अपने-अपने गलत प्रभाव को दर्शक के सामने रखते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भुखमरी - बेरोजगारी और राज्य - अवस्था। की समस्याओं को उजागर कर दर्शक को सोचने पर मजबूर कर देते हैं।

भारतेन्दु के नाटकों जैसे भारत - दुर्दशा, अन्धेर नगरी और ~~पत्र - पत्रिकाओं में नवजागरण लेख~~ की प्रशंसा में अ डॉ रामविलास शर्मा ने भी की है। — नवजागरण संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के लेख में

नाटक में बंगाली, महाराष्ट्री और कवि जैसे चरित्रों के माध्यम से राज्य के विरुद्ध कुछ समाधान दिए किन्तु भारतेन्दु ने जानबूझ कर नाटक के अन्त में भारत दु की दुर्दशा दिखाई है ताकि जनता खुद समस्या का समाधान ~~प्रस्तुत~~ सोचे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्णत: भारत दुर्दशा नाटक ने नवजागरण चेतना का प्रवाह किया और लोगों को राष्ट्रीय समस्याओं की ओर आकर्षित किया। इनसे इनकी रचनाओं से प्रभावित होकर लक्ष्मीसागर ने भारतेन्दु को नवजागरण और नवोत्थान का अग्रदूत कहा है।

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ग) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

देवसेना हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रमुख नारी चारित्र में से एक है। प्रसाद अपने प्रत्यभिज्ञ दर्शन या आनन्दवाद का अनुसरण कर मनुष्यों में इच्छा, क्रिया और ज्ञान का समन्वय करना चाहते हैं।

यही आदर्शवादी और सम्पूर्ण गुणों से सम्पन्न चरित्र देवसेना है देवसेना के अन्दर राष्ट्रीय चेतना राष्ट्रीय प्रेम कूट-कूट कर भरा है।

स्वार्थ से पहले राष्ट्र की चिन्ता उनकी विशेषता है वे युद्ध के समय में भी ~~अधय~~ संयम धारण करती है और जीत जाती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जब उसे पता लगता है कि विजया और स्कन्दगुप्त में प्रेम प्रसंग है तो वह अपने आपको इनके बीच नहीं लाना चाहती।

स्कन्दगुप्त से प्रेम होने पर भी वो राष्ट्र हित को पहले महत्व देती है। स्कन्द कहता है कि वह सब छोड़कर देवसेना का सहचर्य चाहता है किन्तु देवसेना उन्हें अपने राष्ट्रीय दायित्व का स्मरण कराती है।

अंत: में भी स्कन्द देवसेना से अपने साथ रहने को कहता है किन्तु देवसेना क्षणिक प्रेम को ठुकरा कर अमरत्व को धारण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह चरित्र विशेषताओं और गुणों से सम्पन्न है। डॉ नगेन्द्र ने देवसेना को हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र कहा है।

15

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation